UNIT-I

मापन का अर्थ → मापन एक निरपेक्ष शब्द है, जिसकी व्याख्या करना कठिन है। प्रायः मापन से अभिप्राय यह लगाया जाता है कि यह प्रदत्तों का अंको के रूप में वर्णन करता है। मापन किसी भी वस्तु का शुद्ध व वस्तुनिष्ठ रूप से वर्णन करता है। किसी भौतिक पदार्थ के गुण व विशेषताओं के परिणाम को अंकात्मक रूप देने की क्रिया को मापन क्रिया कहते हैं। मापन की मुख्य परिभाषाएँ निम्नलिखित है —

1- एम० एस० स्टीवेन्स के अनुसार – "मापन किन्हीं निश्चित स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है।"

2- ब्रेडफिल्ड तथा मोरेडाक के अनुसार – "मापन के द्वारा किसी तथ्य के विभिन्न आयामों को प्रतीक प्रदान करना ही मापन कहलाता है।"

3- ई० ए० पील के अनुसार – "मापन का उद्देश्य व्यक्ति को एक सन्तुलित व्यक्तित्व प्रदान करना है ताकि वह समाज द्वारा प्रदत्त उत्तरदायित्वों का निर्वाह बखूबी कर सके।"

साधारण शब्दों में "मापन क्रिया विभिन्न निरीक्षणों वस्तुओं या घटनाओं को कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार सार्थक व संगत रूप से संकेत चिन्ह या आंकिक वर्णन प्रदान करने की प्रक्रिया है।"

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मापन के मुख्य रूप से तीन कार्य हैं जो इस प्रकार है—

I- यह वस्तुओं की श्रेणी को व्यक्त करता है।
II- यह संख्याओं की श्रेणी को व्यक्त करता है।
III- यह वस्तुओं को अंक प्रदान करने वाले नियमों को व्यक्त करता है।

— शैक्षिक मापन की विशेषताएँ

शैक्षिक मापन की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

I- मापन में कोई निरपेक्ष शून्य बिन्दु नहीं होता है। यह किसी कल्पित मानक के सापेक्ष होता है।

II- मापन की इकाइयाँ निश्चित नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति के लिए इसका मान समान नहीं होगा।

3- शिक्षा में मापन अनन्तता की स्थिती बनाये रखता है। हम कभी यह दावा नहीं कर सकते कि हमने छात्र की सम्पूर्ण उपलब्धि का परीक्षण कर लिया है।

4- मापन अप्रत्यक्ष है अर्थात उसका सीधा मापन न होकर किसी उपयुक्त माध्यम से होता है।

5- मापन का प्रयोग आत्मनिष्ठ मूल्यांकन की अपेक्षा अधिक मितव्ययी है।

6- मापन किसी भी वस्तु का आंशिक वर्णन अत्यन्त शुद्धता से करता है।

शैक्षिक मापन की सीमाएँ —

शैक्षिक मापन की सीमाएँ निम्न प्रकार हैं—

I- मापन का क्षेत्र सीमित होता है। एक समय में हम व्यक्ति के केवल एक या कुछ ही पहलुओं का अध्ययन कर सकते हैं। इसके द्वारा सम्पूर्ण व्यवहार या व्यक्तित्व का कदापि अध्ययन सम्भव नहीं होता।

II- मापन का रूप व्यवस्थित होता है। अतः इसकी प्रक्रिया जटिल है। इसमें मानकीकृत परीक्षणों की आवश्यकता होती है तथा उच्च विश्वसनीय व वैध परीक्षणों का समस्त क्षेत्रों में उपलब्ध होना सम्भव नहीं है।

III- मापन के द्वारा हमें किसी व्यक्ति या प्रक्रिया के विषय में केवल सूचनाएँ मिलती हैं यह कोई निर्णय प्रदान नहीं करता।

5- शैक्षिक विशेषताओं की विमाएं ज्ञात न होने से मापन उतना शुद्ध नहीं हो पाता, जितना कि भौतिक मापन का होता है।

25/05/21

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया